Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.38, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2019, VOL- 7/55

चन्द्रकांता के उपन्यासों में नारी चेतना

शशि किरण, Ph. D.
एसोसिएट प्रोफेसर, किशोरी रमण महाविद्यालय, मथुरा

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

उपन्यास मानव जीवन का सच्चा चित्रण होता है उसमें मानवीय गुण–दोषों, स्थिति परिस्थिति, व्यवस्था, अव्यवस्था आदि का विशद चित्रण होता है। मानव जीवन के कुछ कहे–अनकहे सत्य होते हैं जो सार्वजनिक दृष्टि से हमेशा छुपे रहते हैं एक सफल व सच्चा उपन्यासकार ऐसे गूढ़ सत्यों का उद्घाटन करता है ऐसे ही सच्चे उपन्यासकारों में से एक हैं चन्द्रकांता जी। उन्होंने अपने उपन्यासों में मानव जीवन से जुड़ी अनेक समस्याओं को प्रदर्शित किया है विशेषतः नारी जीवन के अन्तर्मन को उन्होंने अपने उपन्यासों में सहजता से संजोया है। चन्द्रकांता के उपन्यास–साहित्य में भारतीय नारी के विविध रूपों को अति गहनता, गम्भीरता एवं नवीनता के साथ व्यक्त किया हैं।

कश्मीर में जन्मी, पली, बढ़ी चन्द्रकांता ने हिन्दी लेखन में एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किया है। उनके उपन्यासों में कश्मीर के लोक जीवन के रंगों की छटा बिखरी हुई है उनके प्रमुख उपन्यास है। कथासतीसर अपने–अपने कोणार्क, ऐलान गली जिन्दा है, अर्थांतर और अंतिम साक्ष्य, यहाँ वितस्ता बहती है, बाकी सब खैरियत है। चन्द्रकांता के उपन्यासों में स्त्री को स्त्री मन के साथ उजागर किया गया है नारी मन के यथार्थ चित्रों नई–नई संवेदनाओं और उनके नए–नए स्वरों का बड़ा निर्भीक, औपचारिक तथा विलक्षण चित्रण चद्रकांता के उपन्यासों में सहज ही प्रदर्शित होता है। उन्होंने नारी मन की अनेक तहों को परत–दर–परत खोला है।

चन्द्रकांता जी का पहला उपन्यास है अर्थांतर और अंतिम साक्ष्य। अर्थांतर में तथाकथित संस्कारशील घरों की नीतियाँ, दाम्पत्य जीवन को कुरेदती सच्चाईयाँ और अस्तित्वहीनता की यन्त्रणा सहती नारी के अन्तर्द्वन्द्व का चित्रण है आज के जीवन सन्दर्भ में उपादेयता खो चुकी रूढ़ नैतिकताओं की नायिका 'कम्मों' अपने जीवन का पुनर्निरीक्षण करती है और सहज जीवन जीने की आकांक्षा में उन्हें नए अर्थ देती है लेखिका ने अर्थांतर में प्रगतिशील नारी का रूप प्रस्तुत किया है। केवल धर्मपरायण होकर घर पर बैठना लेखिका को मंजूर नहीं वह पुराने रिवाजों को 'रिवाइव' करने का संकेत देती है।

'कम्मो' जब वैवाहिक जीवन में कदम–कदम पर यातनाएँ झेलती है तब 'अर्थांतर' के माध्यम से लेखिका औरत को नए अर्थ खोजने का संकेत देते हुए कहती है।'' गले में मंगलसूत्र पहन कर स्वंतत्र पक्षियों की सी मुक्ति कामना कम्मों को थोथी लगने लगी।[1]

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

टूटने के कगार पर खड़ी कम्मों ने अचानक एक छोटा सा निर्णय लिया कम्मों जिन्दगी की हर सांस को अपनी सांस से छूकर अहमियत देगी, उसे अपने अर्थ देगी। चन्द्रकांता का दूसरा उपन्यास है अंतिम साक्ष्य । इसमें जम्मू की ढक्कियों और डुग्गर परिवार की ठाकुरी आनबान के साथ भिन्न परिवेश की सच्चाईयों का परिचय मिलता है। ढक्की के अखिरी छोर पर बसी ठाकुर की हवेली में बीजी ने अपनी आस्था और उम्मीदों से एक स्वर्ग जैसा घर बनाया था पर मीना नामक एक स्त्री के आने से वह घर उजड़ गया था। बीजी के माध्यम से लेखिका ने नारी जीवन की उन सच्चाईयों का उल्लेख किया है जिसके रहते कोई स्त्री सुखी नहीं रह सकती । पति द्वारा धोखा दिए जाने पर जिस तरह एक स्त्री का विश्वास टूटता है पति द्वारा अन्य स्त्री से सम्बन्ध स्थापित करने के बाद किस तरह वह टूट कर बिखर जाती है, इसका सजीव चित्रण लेखिका ने किया है पति के द्वारा गलती स्वीकार किए जाने पर भी वह उसे माफ नहीं कर पाती क्योंकि ये एक नारी के सम्मान का प्रश्न है लेकिन अन्य स्त्रियों की भांति वह पति से लड़ाई झगड़ा नहीं करती, एकदम शांत हो जाती है एक पुत्र जब अपनी माँ का कोमलांगी और लज्जालु रूप लुप्त होते हुए देखता है जो माँ दिन–रात हंसती–खिलखिलाती रहती थी आज उसे शांत देखता है तब एक स्त्री की मार्मिक मनोस्थिति का वर्णन करते हुए लेखिका कहती है–

"बड़ा होकर विक्की जब माँ को कंजूस की थैली सा कसकर पकड़ी उन यादों की गांठे खोलते देखता तो लाख यत्न करने पर भी माँ को एक चुलबुल शोख लड़की के रूप में टहनियों पर सावन के झूले–झूलती, लंगड़ी–खेलती, खिल–खिल हंसती न देख पाता माँ के चेहरे पर जाने कब और कैसे एक निष्ठावान कामकाजी औरत का व्यस्त और कुछ–कुछ रूखापन लिए चेहरा चिपक गया था जिस पर कोई भी भाव ज्यादा देर तक न टिक पाता क्योंकि क्षणांश में वे यादों के लोक से खुरदरी जमीन पर लौट आती।"[2]

"अंतिम साक्ष्य'' उपन्यास में एक तरफ नारी के स्वाभिमान और सम्मान को प्रस्तुत करती बीजी की कहानी है तो दूसरी तरफ मीना जो ठाकुर की प्रेयसी भी है और बच्चों की मुँह बोली मौसी भी है, उसकी वेदना और पीड़ा भी है जो अपने जीवन में निरन्तर अपमानित होती रहती है। ठाकुर का बेटा जब घर बेचकर महानगर की ओर निकल पड़ता है तो उसके साथ वही मीना मौसी थी जिसने विकी और अन्य समाज के लोगों की सदैव जिल्लत सही थी। इस उपन्यास में एक नारी के ढहने और फिर से खड़े होने की कोशिश अत्यधिक मार्मिक है। नारी के भीतर ममत्व भाव ऐसा होता है जिसकी सदैव जीत होती है। तमाम आसक्तियों और विरक्तियों के बाद नारी की ममता ही एक ऐसा अनूठा भाव है जिसे कभी परिभाषित नहीं किया जा सकता।

चन्द्रकांता जी का तीसरा उपन्यास है– बाकी सब खैरियत है। इस उपन्यास में नारी जीवन से सम्बन्धित पारिवारिक सम्बन्धों में उठने वाले तनाव और खिंचाव का वर्णन है यह वर्णन आर्थिक हितों और वैयक्तिक महत्वाकांक्षाओं से जुड़ा हुआ है। आर्थिक हितों और भौतिक समृद्धि के आगे

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

त्याग और सेवाभाव जैसे मूल्य क्यों और कैसे हल्के पड़ जाते हैं इसका चित्रण करते हुए उपन्यास की नायिका पारूल अपने देवर को पत्र लिखते हुए करती है –

''माँ को बार–बार नोटों की गड्डियां दिखाकर तुम माया महाठगिनी का प्रभाव न दिखाते तो अपनी बीमारी और तमाम शिकायतों के बावजूद वह शायद अपनी नियति को स्वीकार करने की कोशिश करती और हमारी सेवाओं को कोई गरिमा मिल जाती और हमारी कोशिशों को कोई अर्थ मिलता।''[3]

चन्द्रकांता जी का चौथा उपन्यास है– ऐलान गली जिन्दा है। इस उपन्यास में उन्होंने कश्मीर का वह चित्र उभारा है जिससे अधिकांश लोग परिचित नहीं है। इस उपन्यास में नारी के अंतरंग परिवेश की विसंगतियाँ द्वन्द, संघर्ष और राजनीतिक, सामाजिक परिवर्तनों के प्रभाव झेलने की कथा है।

एक साधारण नारी किस तरह लकड़ियों पर भात और साग बनाती है और उसमें बच्चे का मोजा गिर जाने पर उसे धोकर सुखाने की बात कहकर जरूरी कामों में व्यस्त हो जाती है यह यथार्थ चित्रण अन्यत्र मिलना दुर्लभ है। रोजी रोटी की तलाश में युवा वर्ग घर–द्वार छोड़कर देशान्तरों में भटक जाते है और उनकी माँ–बहनें, पत्नी घर पर प्रतीक्षा कर निरन्तर राह देखती रहती है। 'ऐलान गली जिन्दा है' में छोटे–छोटे झगड़े और कभी न सूखने वाले करूणा के स्त्रोत और एक–दूसरे के सुख–दुःख में टांग अड़ाने वाली रियायतें भी हैं।

'यहाँ वितस्ता बहती है' लेखिका का यह उपन्यास संयुक्त परिवार में रहने वाली स्त्रियों का चित्रण करता है एक रोगिणी स्त्री की पीड़ा और दुःख के साथ प्रसन्न रहने की इच्छा और अपने सामने ही पति के सुख के लिए दूसरे विवाह की अनुमति देना नारी के त्याग और प्रेम का अद्भुत उदाहरण है विधवा विवाह और प्रेम विवाह को खुले हृदय से स्वीकार करना नारी के प्रति एक नवीन दिशा प्रदान करता है।

'अपने–अपने कोणार्क' में नारी के प्रेम विवाह और उससे उत्पन्न समस्याओं एवं मनोभावों को दर्शाया गया है। 'कुनी' उपन्यास की नायिका है वह आधुनिक प्रगतिशील नारी का प्रतीक है कुनी का बनाया कोणार्क प्रेम और ऊर्जा का कोणार्क है कोणार्क के स्तम्भ और उसकी स्थापत्य कला से सभी प्रभावित होते हैं पर कुनी उन बारह हजार शिल्पियों के तप और बलिदान से अभिभूत हुई जिसका इतिहास में कोई जिक्र नहीं है। कुनी ऐसी नारी है जिसे कोणार्क और जगन्नाथ धाम की परम्पराओं को बन्द आँखों से नहीं स्वीकार किया, उसने उसे समय सन्दर्भों के साथ अपनी गति और दिशा प्रदान की। यद्यपि उसका बनाया प्रेम रूपी कोणार्क समय के काले पहाड़ ने ढहा दिया शेष बचा हुआ शिला पद्म जीवन को ऊर्जा प्रदान करता रहा। यह कहानी है एक नारी की अस्मिता की, उसके संघर्ष और निर्णय लेने की क्षमता की।

'कथा सतीसर' चन्द्रकांता द्वारा लिखित वृहद उपन्यास है इसे उन्होंने आधुनिक युग में पौराणिक नाम देकर यह साबित किया है कि सब कुछ इतिहास के गर्भ में छिपा है लेखिका ने

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

पौराणिक काल से कश्मीर का इतिहास उठाया है कश्मीर में देवी सती, यशोवती (प्रथम महिला सम्राज्ञी), कवयित्री लल्देद, हब्बा खातून जैसी नारियों का महानतम रूप का उल्लेख भी मिलता है तो दूसरी तरफ अंधविश्वास और रूढ़ियों से जूझती नारी की दुर्दशा का चित्रण भी 'कथा–सतीसर' उपन्यास में मिलता है।

"मेरी सास ने मुझे खनवल के जटाधारी बाबा के पास भेजा तो क्या वह सन्यासी? वह सन्यासी थोड़े था पाखण्डी बदमाश था बोला नहा धोकर सूर्योदय से पहले आओ मन्त्र दूंगा और जब मैं उसके गान्जे के धुएं से भरी कोठरी में गई तो बोला सेवा करो सिद्ध बाबा को प्रसन्न करो तो बीज पड़ जाएगा। उसका पूरा शरीर कांप रहा था मैं डर गई जब मुझे पास खींचा तो मैं पूरा जोर लगाकर भागी।"[4]

इस प्रकार चन्द्रकांता ने एक नारी के मन की गहराईयों में झांककर नारी के भीतर और बाह्य यथारूप को बखूबी दर्शाया है। नारी परिवाररूपी वृक्ष की धुरी होती है। नारी संसार का सबसे बहुमूल्य रत्न है उसकी सबसे बड़ी विशेषता उसके अन्दर माँ की आत्मा का छिपा होना है इसीलिए चन्द्रकांता एक स्थल पर लिखती हैं–

"माँ शायद चीज ही ऐसी होती है कि सामने हो तो घर के जरूरी सामान का हिस्सा भर नजर आती है लेकिन नजर की ओट हो जाए तो पूरे घर में बीयाबान उग जाता है।"

चन्द्रकांता ने नारी हृदय के प्रेम की व्यथा और उससे उत्पन्न पीड़ा को अत्यधिक सरसता एवं आकर्षक के साथ लिखा है। उन्होंने स्त्री को स्त्री मन के साथ उजागर किया है परन्तु जहाँ उन्हें नारी में बुराई नजर आती है वहाँ उसकी भर्त्सना भी करती है। जहाँ नारी पर अत्याचार हुआ है वहाँ उन्होंने उन रीति रिवाजों कुरीतियों का स्पष्ट रूप से बहिष्कार किया है नारी जो कहीं–कहीं मात्र उपभोग की वस्तु समझी जाती हो, उस के तन–मन को मसल दिया जाता है ऐसी स्थिति को उन्होंने स्वीकार न करके उसकी अन्तःपीड़ा को उजाकर किया है उसे उस साहस को बटोरने की सलाह दी है जो उससे कहीं छूट गया था जिसके छूटने से हर व्यक्ति उस पर हावी हो जाता है।

लेखिका ने नारी मन की तहों को खोलना चाहा पर बड़े सुसभ्य तरीके से जिससे न तो स्त्री का तन–मन आहत हो न ही उसका असर समाज को विघटन की शक्ल दे बल्कि जो कुछ गलत है उसे सही करने का प्रयास ही उनकी रचनाओं में उजागर होता है। कभी–कभी तो वो नारी की सोच के साथ इतना गहरी उतरती गईं कि नारी के अस्तित्व के बारे में पौराणिक काल से ही सोचने लगी। आज की नारी भारतीय आदर्शवादी नारी के त्याग और बलिदान से ही घबराने लगी। "यहाँ वितस्ता बहती है'' की नायिका जो राजनाथ की पुत्री है, भयभीत होने लगती है।

"अंजाने ही वह पंचसतियों के इतिहास से डरने लगी। अहिल्या, द्रोपदी, कुंती, तारा, मंदोदरी । कहीं ये ठगी गयी कहीं इन्होंने धोखा खाया, कहीं लांछित हुई, कहीं इनका दुरूपयोग हुआ। अहिल्या

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies

शाप की भागी बनी किस अपराध के कारण बन गयी? तारा और मंदोदरी ने क्लेश क्यों पाया? द्रोपदी ने तो वीर अर्जुन को वरा था विजयी पुत्र घर आए और माँ को पुकार कर कहा "माँ देखो हम क्या लायें हैं? किसी कार्य में व्यस्त माँ ने उत्तर दिया "आपस में बांट कर ले लो" और द्रौपदी पाँच पाण्डवों में बांटी गयी। कैसे सहा होगा उसने यह अन्याय ? या कि समझौते करना आदिकाल से नारी की नियति रही है। सिर झुकाकर कान बंद कर सहना ही इनकी नियति थी।"[5]

चन्द्रकांता जी ने नारी को लेकर बहुत लिखा है उसके कष्ट उसके मन और मस्तिष्क को झकझोर देते हैं स्त्री विमर्श के संदर्भ में वे करती हैं स्त्री विमर्श में परिवार को तोड़ने की नहीं जोड़ने की बात करती चाहिए उनके स्वयं के शब्दों में "मैंने समय और समाज के बदलते परिवेश में, व्यवस्था के विभिन्न पक्षों को बीच में रखकर स्त्री के संघर्षों, अधिकारों, शोषण और विद्रोहों का परीक्षण किया है। मैं महाश्वेता देवी की तरह मानती हूँ कि लेखिकाओं को स्त्री–वाद की बहसों में उलझने के बजाय स्त्री को जमीनी सच्चाईयों के साथ देखना जरूरी है।"[6]

लेखिका ने स्त्री के सबलं पक्ष को अधिक महत्व देते हुए कहा है– ''घर परिवार की धुरी स्त्री क्यों केन्द्र में कदम जमाने से पहले ही बार–बार हाशिए पर धकेल दी जाती है भूमण्डलीकरण के इस दौर में क्या स्त्री के लिए कसाई घर मौजूद नहीं जहाँ खामोश अनपढ़ और तेज तर्रार दोनों मिजाज की स्त्रियाँ, गाहे–बगाहे शहीद हो जाती हैं।"[7] चन्द्रकांता ने नारी को समाज एवं जगत का जरूरी उपादान माना है। उन्होंने यह भी स्वीकार किया है कि नारी के बगैर पुरूष अधूरा है उनका दृष्टिकोण नारी के प्रति सदैव आदर्शवादी रहा है वे नारी की कद्र करती हैं जहाँ वो कमजोर है उसका उत्साहवर्धन करती है। जहाँ वो क्रूर है उसकी आलोचना भी करती है उनकी दृष्टि में नारी सृष्टि का आधारभूत सत्य है वह ईश्वर की ऐसी बहुमूल्य सम्पत्ति है जिसे यदि प्यार से संभालकर रखा जाए तो बदले में ढेरों गुना प्यार व संतुष्टि मिलती है। इस प्रकार नारी को लेकर उनका दृष्टिकोण स्वच्छ एवं स्पष्टवादी है।

संदर्भ सूची

अर्थातर चन्द्रकांता, पृष्ठ सं. 107
अंतिम साक्ष्य – चन्द्रकांता, पृष्ठ सं. 34
बाकी सब खैरियत है – चन्द्रकांता, पृष्ठ सं. 44
कथा सतीसर– चन्द्रकांता, पृष्ठ सं. 248
यहाँ वितस्ता बहती है– चन्द्रकांता, पृष्ठ सं. 85
मेरे भोज पत्र– चन्द्रकांता पृष्ठ सं. 59
हाशिए की इबारत– चन्द्रकांता, पृष्ठ सं. 7

Copyright © 2019, Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies